

22. समन्वय ही हमारी परम्परा

—जवाहर लाल नेहरू

आज के भारत को समझना और उसका वर्णन करना किसी वीर पुरुष का ही काम हो सकता है। कल के भारत के बारे में कुछ कहना जल्दबाजी होगी।

भारत है क्या ? यह सवाल बार-बार मेरे दिमाग में आता रहा है। अपने इतिहास के आरम्भिक काल ने मेरे मन में आश्चर्य पैदा किया है। यह एक पुरुषार्थी और शक्तिशाली जाति का अतीत था, जो खोज की भावना से और अबोध जिज्ञासा की प्रेरणा से भरपूर थी और अपने साथ इतिहास के आरम्भ से ही इसने एक परिपक्व तथा सहिष्णु सभ्यता का परिचय दिया। जीवन और इसके आनन्द तथा दायित्वों को स्वीकार करते हुए इसने हमेशा अनन्त और असीम की ही खोज की। इसने संस्कृत जैसी समृद्ध भाषा की रचना की और इसने इस भाषा, अपनी कलाओं और वास्तुविद्या के द्वारा दूर-दूर के देशों तक अपना जीवनदायी संदेश भेजा। इसने उपनिषदों, गीता और बुद्ध को जन्म दिया।

दुनिया की शायद ही किसी और भाषा ने किसी जाति के इतिहास में इतनी जबरदस्त भूमिका निभाई हो जितनी संस्कृत ने निभायी है। यह उच्चतम विचारों और कतिपय श्रेष्ठतम साहित्य की ही वाहक नहीं रही, बल्कि राजनैतिक विभाजन के बावजूद भारत को बाँधने का सूत्र भी रही। हजारों वर्षों तक रामायण तथा महाभारत हर पीढ़ी के करोड़ों लोगों के जीवन में ताने-बाने की तरह बुने जाते रहे। मैं अक्सर सोचा करता हूँ कि अगर हमारी जाति बुद्ध, उपनिषदों और अन्य महान् ग्रंथों को भूल जाये तो इसका क्या होगा ? यह तो जड़ से उखड़ जायेगी और अपने मूल चरित्र को खो बैटेगी, जो प्राचीन काल से लेकर आज तक इसकी विशेषता रही है ? भारत, भारत ही नहीं रहेगा।

धीरे-धीरे पतन होने लगा। विचारों ने अपनी ताज़गी खो दी और वे बासी पड़ गये। यौवन की शक्ति और उत्साह की जगह जरा ने ले ली। साहस और अध्यवसाय की जगह निर्जीव नित्यचर्या ने ले ली और उदार तथा विश्वव्यापी दृष्टि, जाति के टुकड़ों संकीर्ण सामाजिक रीति-रिवाजों और रस्मों में सीमित और बंद होकर रह गयी। इसके बावजूद भारत उन छोटी-छोटी धाराओं को आत्मसात् करने में समर्थ रहा, जो मानवता के इस महानगर में आकर मिलती रही और उसने उन विचारों को कभी नहीं भुलाया, जो उसके उमंग-भरे यौवन काल में उसे प्रेरित करते रहे।

इसके बाद इस्लाम के आने पर और मुसलमानों के आक्रमणों से भारत पर बहुत प्रभाव पड़ा इसके बाद पश्चिम की उपनिवेशवादी शक्तियाँ आयीं और अपने साथ एक नये प्रकार का प्रभुत्व और नये उपनिवेशवाद को लेकर आयीं, साथ ही नये विचारों और औद्योगिक सभ्यता का भी असर लेकर आयीं, जो यूरोप में बढ़ती और फैलती जा रही थी। एक लम्बे संघर्ष के बाद यह काल बीता और आज़ादी आयी और अब हम स्वतंत्र होकर अपने आने वाले युग

के बारे में बीते युग के सारे बोझ को लेकर और कुछ अस्पष्ट-से सपने लेकर और जैसा भी भविष्य हम बनाना चाहते हैं, उसका उत्साह लेकर भविष्य का सामना कर रहे हैं।

इतिहास के हर काल के प्रतिनिधि हमारे बीच में मौजूद हैं। हमारे पास जहाँ एक ओर परमाणु विज्ञान और परमाणु शक्ति का विकास हुआ है, वहाँ गया के गोबर का युग भी यहाँ मौजूद है।

आर्थिक प्रगति आवश्यक है और यह अन्य सभी प्रकार की प्रगति के लिए भी ज़रूरी है, लेकिन हमारे मन में एक सन्देह आ जाता है। क्या यही काफ़ी है या इसमें कुछ और भी जोड़ना होगा ? कल्याणकारी राज्य एक अनुकरणीय आदर्श है, लेकिन यह भी कुछ नीरस-सा पड़ जाता है। जो राज्य इस लक्ष्य को पा चुके हैं, उनके यहाँ नयी समस्याएँ और कठिनाइयाँ सामने आ खड़ी हुई हैं, जो केवल भौतिक प्रगति या यांत्रिक सभ्यता के बल पर नहीं सुलझाई जा सकतीं, चाहे धर्म आवश्यक हो या न हो। किसी उच्चादर्श में कुछ आस्था होना, अपने जीवन को सार्थक करने और हमें बाँधे रखने के लिए आवश्यक है।

परिवर्तन अनिवार्य है, लेकिन निरन्तरता भी आवश्यक है। विगत और वर्तमान में जो नींव रखी जाती है, उसी पर भविष्य का निर्माण होता है। अतीत को निकालने और अपने आपको बिल्कुल काट लेने का मतलब है, अपना उनमूलन और अपने जीवन-रस को सुखा डालना। गांधी जी का यह गुण था, जो उन्होंने अपनी जाति और अपनी भूमि की समृद्ध परम्पराओं में अपने पैर जमाये रखे और शान्तिपूर्ण तरीकों पर जोर दिया। उन्होंने पुरानी नींव पर निर्माण किया, लेकिन फिर भी ऊपर का ढाँचा ऊपर की ओर दृष्टि रखकर खड़ा किया।

जब इस्लाम राजनैतिक विजेता के रूप में भारत में आया तो इससे संघर्ष पैदा हुआ, इससे दो तरह के असर पड़े। एक तरफ हिन्दू समाज में अपने ही दायरे में और सिकुड़ जाने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिला और दूसरी तरफ एक नयी हवा, नये आदर्श भी देश में आये जिनका कुछ पुनर्जीवनकारी प्रभाव हुआ। हिन्दू समाज एक बन्द प्रणाली बन चुका था। मुसलमान अपने साथ बाहर से अपनी एक और प्रणाली लेकर आये। इस प्रकार मध्य युग में भारत के सामने यह एक बड़ी भारी समस्या थी कि इस दोनों बन्द प्रणालियों में, जिनकी अपनी-अपनी जड़ें भी काफ़ी मज़बूत थीं, किस प्रकार से स्वस्थ सम्बन्ध स्थापित करे। अकबर और अन्य कुछ बुद्धिमान शासकों ने यह अनुभव किया कि इनमें थोड़ा-बहुत समभाव पैदा होने से भी अच्छे भविष्य की आशा की जा सकती है। प्राचीन हिन्दुओं का दर्शन और विश्व-दृष्टि आश्चर्यजनक रूप से सहिष्णु थी, लेकिन फिर भी उन्होंने अपने आपको अलग-अलग असंख्य जातियों और धार्मिक मत-मतांतरों में बाँट लिया था। मुसलमानों के सामने एक नयी समस्या थी, अर्थात् दूसरों के साथ बराबरी के हैसियत से कैसे रहें। दूसरे देशों में जहाँ भी वे गये, उनकी सफलता इतनी अधिक थी कि यह समस्या वास्तव में उनके सामने ही नहीं आयी। ईसाइयत से भी उनका टकराव हुआ और कई सौ साल तक समस्या हल नहीं हुई। हिन्दुस्तान में धीरे-धीरे कुछ समन्वय होने लगा, लेकिन उसके पूरे होने से पहले ही दूसरे प्रभाव आ गए।

पश्चिम के नये उदार विचारों और औद्योगिक प्रक्रिया ने भारत के मन और जीवन को प्रभावित करना शुरू किया। एक नये प्रकार के राष्ट्रवाद का विकास हुआ, जो लाजमी तौर से उच्चनिवेशवाद के खिलाफ था और जिसने आजादी की माँग की, लेकिन फिर भी यह निरंतर नयी औद्योगिक सभ्यता ही नहीं, उसके साथ पश्चिम की भाषा साहित्य और रहन-सहन से प्रभावित रहा।

राजा राम मोहन राय ने पुराने भारत और नयी प्रवृत्तियों में कुछ समन्वय करने का प्रयत्न किया। विवेकानन्द पुराने विचार की कुछ शक्ति को वापस लाए और उसे नया जामा पहनाया। राजनैतिक और सांस्कृतिक आंदोलन पैदा हुए और उनकी परिणति गांधी जी और रवीन्द्रनाथ ठाकुर में हुई।

यूरोप में भी विज्ञान और परम्परागत धर्म में उग्र संघर्ष हुआ और ईसाइयत के ब्रह्मांड सम्बन्धी ज्ञान का वैज्ञानिक सिद्धान्तों से मेल नहीं बैठा, लेकिन भारत में विज्ञान से उस तरह का संघर्ष उत्पन्न नहीं हुआ और भारतीय दर्शन ने अपने मूल तत्त्वों को बिना प्रबल आघात पहुँचाये इसे स्वीकार कर लिया।

जीवन का अर्थ बदलती हुई परिस्थितियों में निरंतर सामंजस्य बनाये रखना है। पिछली आधी सदी में जिस तेजी से टेक्नोलॉजी में परिवर्तन हुए हैं, उसने सामाजिक परिवर्तनों की आवश्यकता भी इतनी ही तीव्र कर दी है, जितनी पहले कभी नहीं थी और इसी वजह से लगातार कुछ सामंजस्य बना रहा है। विज्ञान और टेक्नोलॉजी की उन्नति से अब दुनिया की आर्थिक समस्याएँ और खासकर दुनिया भर के सब लोगों की बुनियादी जरूरतें पूरी करने की समस्या हल करना सम्भव हो गया है। इसके लिए कौन-से तरीके अपनाए जायें, यह उस मुल्क या समुदाय की पृष्ठ भूमि और सांस्कृतिक विकास पर निर्भर होगा।

अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से आज का बड़ा सवाल विश्वशान्ति का है। आज हमारे लिए यही विकल्प है कि हम दुनिया को उसको अपने रूप में ही स्वीकार करे और एक-दूसरे के लिए ज्यादा-से- ज्यादा सहनशीलता पैदा करें। हर देश में इस बात की स्वतंत्रता रहे कि वह अपने ढंग से अपना विकास करे और दूसरों से सीखें, लेकिन दूसरे उस पर अपनी कोई चीज नहीं थोपें। निश्चय ही इसके लिए नयी मानसिक विधा चाहिए। पंचशील या पांच सिद्धान्त यही विधा बताते हैं।

जिन मूल्यों ने इस समाज को चलाया उनकी जगह नये प्रकार के मूल्य आ गए हैं। हमारे सामने सवाल यही है कि आखिरकार करोड़ों लोगों के सोचने और काम करने के तरीकों को बदला जाए और जब सब लोगों की सहमति से, लोकतंत्रीय ढंग से किया जाये।

वर्तमान पीढ़ी की परिश्रम और उथल-पुथल से क्या निकलेगा ? मैं नहीं कह सकता कि आने वाला कल का भारत किस प्रकार का होगा ? मैं केवल अपनी आशाएँ ही व्यक्त कर सकता हूँ। मैं चाहता हूँ कि भारत भौतिक स्तर पर आगे बढ़े। अपनी पंचवर्षीय योजनाओं को पूरा करने के लिए और अपनी विशाल जनसंख्या के जीवन-स्तर को सुधारने के लिए। मैं चाहता हूँ कि

आज भी धर्म या जाति, भाषा या प्रांत के नाम पर जो संकीर्ण टकराव चला रहा है, वह ख़त्म हो और ऐसा वर्गविहीन और जातिविहीन समाज बने, जिसमें हर व्यक्ति को अपनी योग्यता और गुणों के अनुसार फलने-फूलने का पूरा अवसर मिले। खासकर मैं आशा करता हूँ कि जात-पात का यह अभिशाप जरूर मिट जायेगा क्योंकि जात-पात के आधार पर न तो लोकतन्त्र आ सकता है और न समाजवाद।

विज्ञान आज मज़हब की पुरानी कल्पना को चुनौती दे रहा है, किन्तु यदि मज़हब सिर्फ अंधविश्वासों और धार्मिक रस्मों तक की ही सीमित न रहे और जीवन की कुछ चीज़ों से वास्ता रखे, तब न तो इसका विज्ञान से कोई विरोध होगा और न आपस में एक दूसरे से। हो सकता है, इस प्रकार से समन्वय के काम में भारत को सहायक होने का सौभाग्य प्राप्त हो। यह भारत की उस प्राचीन परम्परा के अनुरूप ही होगा, जो अशोक के शिलालेखों में अंकित मिलती है।

कल का भारत यही होगा, जो आज हम अपनी मेहनत से बनायेंगे। हम इस यात्रा पर सच्चे दिल और मज़बूत इरादों से बढ़े हैं और यह यात्रा चाहे जितनी लम्बी हो, हम इसके अन्त तक पहुँचकर रहेंगे।

मैं जिस चीज़ के बारे में सोचता हूँ, वह केवल हमारी भौतिक प्रगति नहीं है, बल्कि वह है, हमारे लोगों की गुण और गहराई। औद्योगिक प्रक्रिया से ताकत हासिल करके क्या मेरे देशवासी अपने आपको व्यक्तिगत धन-लिप्सा और आरामतलबी में खो बैठेंगे ? ऐसा होना एक बहुत बड़ी विपत्ति होगी, क्योंकि यह उन सब आदर्शों को नकारना होगा, जो अतीत में भारत के सामने रहे हैं और आशा करता हूँ कि वर्तमान काल में भी ऐसा ही हो, जिसकी मिसाल गांधी जी थे।

क्या हम विज्ञान, टेक्नोलॉजी की तरक्की को मन और आत्मा की तरक्की के साथ जोड़ सकते हैं ? हम विज्ञान के प्रति झूठे नहीं बन सकते, क्योंकि यह आज जीवन का बुनियादी तथ्य है। इस तरह हम उन मूलभूत सिद्धान्तों को भी नहीं झुठला सकते, जिन पर भारत युगों-युगों तक चलता रहा है।

* अभ्यास *

1. भारत का अतीत कैसा था ?
2. प्राचीन भारत में संस्कृत भाषा ने क्या भूमिका निभाई ?
3. देश के लिए आर्थिक प्रगति क्यों आवश्यक है ?
4. पंचशील का क्या महत्त्व है ?

